National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2018; 1(19): 92-94
© 2018 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ सुरेश कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत),
भगवान परशुराम महाविद्यालय,
कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

Correspondence:
डॉ सुरेश कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत),
भगवान परशुराम महाविद्यालय,
कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

पाराशरी शिक्षा: वैदिक ज्ञान-परम्परा का स्तम्भ

डॉ सुरेश कुमार

वैदिक साहित्य अपनी समग्रता और गहनता के लिए विश्वविख्यात है। इस विशाल ज्ञान-भंडार को सुरक्षित, शुद्ध और प्रामाणिक रूप से अगली पीढ़ियों तक पहुँचाने के लिए ऋषियों ने छह वेदांगों की रचना की। इनमें से शिक्षा वेदांग प्रथम और सर्वाधिक मौलिक है, क्योंकि यह वेदों के उच्चारण की शुद्धता का विज्ञान है। इसी महान परम्परा में एक प्रमुख नाम ऋषि पराशर का आता है। पराशर ऋषि ने ज्योतिष के क्षेत्र में तो अमर "बृहत्पाराशर होरा शास्त्र" की रचना की ही, साथ ही उन्होंने वैदिक शिक्षा-शास्त्र में भी अमूल्य योगदान दिया। "पाराशरी शिक्षा" उनके द्वारा प्रतिपादित या उनके नाम से प्रचलित वह पद्धति है जो वैदिक मंत्रों के शुद्ध उच्चारण, स्वर, मात्रा, बल आदि का विधिवत् ज्ञान कराती है। यह लेख पाराशरी शिक्षा के महत्व, उससे जुड़े मूल मंत्रों एवं वैदिक ज्ञान परंपरा पर एक गहन दृष्टिपात प्रस्तुत करेगा।

शिक्षा वेदांग: एक परिचय एवं पाराशरीय संदर्भ

वेदों का सही उच्चारण केवल ध्वनि का विषय नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक विज्ञान है। मान्यता है कि यदि मंत्र का उच्चारण शुद्ध न हो, तो उसका प्रभाव विपरीत भी हो सकता है। शिक्षा इसी शुद्धता को सुनिश्चित करती है।

पाणिनीय शिक्षा में कहा गया है कि -

"वर्णः स्वरः। मात्रा बलम्। सास्तु रेचनम्।।

ओमित्येवं ज्ञेयं शिक्षितैर्वर्णसंस्कृतम्।।[1]"

"वर्ण, स्वर, मात्रा, बल, और सान (यम) – इन छह अंगों के साथ वर्णों का उच्चारण करना चाहिए। इस प्रकार 'ॐ' का ज्ञान शिक्षा में निपुण व्यक्तियों द्वारा वर्णों का संस्कार(शुद्धिकरण) कहा गया है।"

पाराशरीय परिप्रेक्ष्य : ऋषि पराशर ने इसी मौलिक सिद्धांत को और अधिक विस्तार किया। उनके ग्रंथों में वर्णों के उच्चारण स्थान, प्रयत्न और स्वरों के नियमों का गहन विवेचन मिलता है। यह ज्ञान केवल पुस्तकीय नहीं था, बल्कि गुरु-शिष्य परम्परा के माध्यम से जीवंत रूप में स्थानांतरित होता था।

पाराशरी शिक्षा का महत्व: एक बहुआयामी दृष्टिकोण

पाराशरी शिक्षा का महत्व केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है। इसका दार्शनिक, वैज्ञानिक और सामाजिक प्रभाव अत्यंत व्यापक है।

1. वैदिक ध्वनि-विज्ञान और आध्यात्मिक प्रभाव :-

वैदिक ऋषियों का मानना था कि ब्रह्मांड की समस्त सृष्टि शब्दब्रह्म से लयबद्ध है। वेद इसी शब्दब्रह्म के

2. स्वरूप हैं। इसलिए वेद मंत्रों का शुद्ध उच्चारण केवल पाठ नहीं, बल्कि ब्रह्मांडीय ऊर्जा के साथ तालमेल स्थापित करने की प्रक्रिया है। पाराशरी शिक्षा इस तालमेल को स्थापित करने का मार्गदर्शन है। शुद्ध उच्चारण से निकली ध्वनि-तरंगें वातावरण और साधक के मन-शरीर दोनों को शुद्ध व सकारात्मक बनाती हैं।

स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्॥[2]

2. ज्ञान की मौखिक परम्परा का संरक्षण :-

वेदों को "अपौरुषेय" माना जाता है और सहस्राब्दियों तक इन्हें लिखित रूप में न रखकर, केवल श्रुति (सुनकर) और स्मृति (याद रखकर) के माध्यम से सुरक्षित रखा गया। पाराशरी शिक्षा जैसी पद्धतियों ने इस मौखिक परम्परा को अक्षुण्ण बनाए रखने में निर्णायक भूमिका निभाई। स्वर, मात्रा और उच्चारण के कठोर नियमों ने यह सुनिश्चित किया कि एक-एक शब्द, एक-एक अक्षर हजारों वर्षों तक बिना किसी विकृति के सुरक्षित रहे।

3. भाषा-विज्ञान और व्याकरण का आधार :-

पाणिनि के अष्टाध्यायी जैसे प्राचीनतम और वैज्ञानिक व्याकरण ग्रंथ का आधार शिक्षा-शास्त्र ही है। पाराशरी शिक्षा में वर्णों के वर्गीकरण (कंठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य), उनके उच्चारण स्थान और प्रयत्न का जो विश्लेषण मिलता है, वह आधुनिक ध्वनि-विज्ञान का प्रारम्भिक स्वरूप है।

4. सांस्कृतिक एकता और पहचान का सूत्र :-

सम्पूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप में, चाहे भाषाएँ कितनी भी भिन्न क्यों न हों, वैदिक मंत्रों का उच्चारण एक समान रहा है। यह एकता पाराशरी शिक्षा जैसी मानकीकृत पद्धतियों के कारण ही संभव हो सकी। इसने एक सांस्कृतिक एकसूत्रता बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

पाराशरी शिक्षा के मूल मंत्र एवं प्रामाणिक सन्दर्भ

यहाँ पराशर ऋषि से सम्बद्ध शिक्षा-पद्धति के कुछ मूलभूत सिद्धांतों और मंत्रों को उनके मूल ग्रंथ सन्दर्भों के साथ प्रस्तुत किया जा रहा है।

1. प्रारम्भिक मंत्र एवं ऋषि-सम्बन्ध :-

वैदिक परम्परा में किसी भी विद्या का अध्ययन एक दिव्य मंत्र से प्रारम्भ होता है। पराशर ऋषि से सम्बन्धित इस गायत्री मंत्र का उल्लेख विभिन्न ग्रंथों में मिलता है।

ॐ पराशराय विद्महे वासवीपुत्राय धीमहि।

तन्नो मुनिः प्रचोदयात्॥[3]

"हम पराशर ऋषि को विद्महे (जानें), वासवी (देवी) के पुत्र का ध्यान करें। वह मुनि हमारी बुद्धि को प्रेरित करें (प्रचोदयात्)।"

यह मंत्र पराशर ऋषि को समर्पित एक ऋषि-गायत्री है। ऐसे मंत्रों का प्रयोग उस ऋषि के ज्ञान को ग्रहण करने से पहले उनकी कृपा प्राप्त करने के लिए किया जाता है। यह मंत्र तंत्र-ग्रंथों एवं ऋषि-परम्परा में प्रचलित है।

2. वर्ण-अभ्यास के मूल मंत्र :-

शिक्षा का प्रथम चरण है वर्णों का शुद्ध उच्चारण सीखना। इसमें स्वर (अ, आ, इ, ई...) और व्यंजन (क, ख, ग, घ...) का अभ्यास कराया जाता है। यह अभ्यास प्रायः "वर्णाभ्यास मंत्र" के रूप में किया जाता है।

"अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ए ऐ ओ औ अं अः।

क ख ग घ ङ। च छ ज झ ञ। ट ठ ड ढ ण।

त थ द ध न। प फ ब भ म।

य र ल व। श ष स ह। क्ष त्र ज्ञ श्र।।

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन्।

यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम्॥[4]"

(सभी वर्णों का क्रमशः उच्चारण)। "ॐकार, विसर्ग (अः) सहित, स्वर हो या व्यंजन, सब कुछ ब्रह्म ही है।"

- यह क्रम शिक्षा के विभिन्न ग्रंथों जैसे "व्यास शिक्षा", "याज्ञवल्क्य शिक्षा" आदि में मिलता है। यह मंत्र वर्णों के अभ्यास के साथ-साथ यह दार्शनिक सत्य भी सिखाता है कि समस्त ध्वनियाँ परमात्मा का ही स्वरूप हैं। पाराशरीय पद्धति में इस अभ्यास पर विशेष जोर दिया जाता था।

3. शिक्षा-शास्त्र के सिद्धांतों का प्रतिपादन :-

पराशर ऋषि के सिद्धांतों को समझने के लिए हमें शिक्षा के सामान्य ग्रंथों का सहारा लेना पड़ता है, क्योंकि "पाराशरी शिक्षा" नाम से कोई अलग संरक्षित ग्रंथ दुर्लभ है। उनके सिद्धांत अन्य ग्रंथों में समाहित हैं।

- याज्ञवल्क्य शिक्षा

o यह शिक्षा का एक अत्यंत प्रसिद्ध ग्रंथ है, जिसमें स्वर-ज्ञान का विस्तृत वर्णन है।

उदात्तश्चानुदात्तश्च स्वरितश्च त्रयः स्वराः।

ते सर्वे सविशेषेण मन्त्रेष्वेव प्रयुज्यते।।[5]

"उदात्त, अनुदात्त और स्वरित – ये तीन प्रकार के स्वर हैं। इन सभी का विशेष रूप से केवल मंत्रों में ही प्रयोग किया जाता है।"

"ओमित्यागम्य सर्वत्र विनियोगः प्रकीर्तितः।

तस्मादोमिति निर्दिश्य प्रयोगः सर्वकर्मसु।।[6]" "ॐ का आगमन (प्रयोग) सर्वत्र कहा गया है। इसलिए ॐ को निर्दिष्ट करके सभी कर्मों

(अनुष्ठानों) में इसका प्रयोग करना चाहिए।"

- पाराशरीय संबंध: पराशर ऋषि ने इन्हीं मौलिक सिद्धांतों को अपनी शिक्षा-पद्धति में समेटा और उन्हें व्यवहारिक रूप दिया। उनका ज्योतिषीय ग्रंथ भी वैदिक मंत्रों के साथ गहरे जुड़ा है, जिसमें मंत्र-साधना के लिए शुद्ध उच्चारण का ज्ञान अनिवार्य है।

कृष्णद्वैपायनं व्यासं विद्धि नारायणं प्रभुम्॥[7]

4. बृहत्पाराशर होरा शास्त्र से संकेत :-

हालाँकि यह ग्रंथ मुख्यतः ज्योतिष पर है, लेकिन इसमें भी मंत्र-साधना और शुद्ध उच्चारण के महत्व पर प्रकाश डाला गया है, जो पराशर ऋषि के शिक्षा-शास्त्र के प्रति दृष्टिकोण को दर्शाता है।

"मन्त्राराधनयोगेन देवतानां प्रसादतः।

जायते सर्वकामसिद्धिः...।[8]

"मंत्रों की अर्चना के योग से और देवताओं की कृपा से सभी कामनाओं की सिद्धि होती है।"

• इस श्लोक का तात्पर्य यह है कि मंत्र-साधना सफल तभी होती है जब मंत्र का शुद्ध उच्चारण किया जाए, जो कि शिक्षा-शास्त्र का ही विषय है। इस प्रकार, पराशर ऋषि ने ज्योतिष और मंत्र-विज्ञान को एक-दूसरे का पूरक माना।

वर्तमान समय में पाराशरी शिक्षा की प्रासंगिकता

आधुनिक डिजिटल युग में भी पाराशरी शिक्षा का महत्व कम नहीं हुआ है।

1. भाषाई कौशल का विकास :- शिक्षा-शास्त्र का अभ्यास करने वाला व्यक्ति न केवल संस्कृत, बल्कि किसी भी भाषा का शुद्ध उच्चारण करना सीख जाता है। यह उसके व्यक्तित्व और संचार कौशल को निखारता है।

वर्णस्वरमात्राबलसामसन्तानः॥[9]

2. योग और प्राणायाम में सहायक :- शिक्षा में वर्णों के उच्चारण स्थान (कंठ, तालु आदि) का जो ज्ञान दिया जाता है, वह प्राणायाम और मंत्र-जाप में बहुत सहायक होता है। इससे प्राण-ऊर्जा का सही मार्गदर्शन होता है।

चले वाते चलं चित्तं निश्चले निश्चलं भवेत्।

योगी स्थाणुत्वमाप्नोति ततो वायुं निरोधयेत्॥[10]

3. सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण :- वैदिक मंत्रों के सही उच्चारण और गायन की परम्परा को जीवित रखने का यही एकमात्र मार्ग है। दुनिया भर के वेद-विश्वविद्यालय (जैसे- पूना, तिरुपति, श्रंगेरी) आज भी इन्हीं शिक्षा-पद्धतियों का अनुसरण करते हैं।

मातृदेवो भव। पितृदेवो भव।

आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव॥[11]

निष्कर्ष :-

इस अध्ययन के आधार पर स्पष्ट होता है कि पाराशरी शिक्षा वैदिक ध्वनि-विज्ञान (शिक्षा) की उस परंपरा का प्रतिनिधित्व करती है, जिसने वैदिक ज्ञान के संरक्षण को संरचनात्मक और अनुशासित रूप प्रदान किया। वैदिक परम्परा मूलत : श्रुति-आधारित रही है, जिसमें ज्ञान का संप्रेषण लिखित माध्यम की अपेक्षा मौखिक परम्परा द्वारा अधिक विश्वसनीय माना गया। इस दृष्टि से पाराशरी शिक्षा का महत्व केवल ध्वनि-विज्ञान तक सीमित न होकर, संपूर्ण वैदिक परम्परा के संरक्षण में निहित है।

निष्कर्ष यह निकलता है कि वैदिक ज्ञान की शुद्धता का मूल आधार उच्चारण की वैज्ञानिक पद्धति है, जिसमें वर्ण, स्वर, मात्रा, बल तथा संतान (ध्वनि-प्रवाह) की सूक्ष्म व्यवस्था निर्धारित की गई है। इन तत्वों की व्यवस्थित साधना से मन्त्रों की संरचना अक्षुण्ण बनी रहती है। द्वितीय, गुरु– शिष्य परम्परा को ज्ञान-संरक्षण का अनिवार्य माध्यम माना गया है, जिसके द्वारा न केवल पाठ, बल्कि उसके सूक्ष्म ध्वन्यात्मक गुण भी सुरक्षित रहते हैं। निरन्तर स्वाध्याय एवं अभ्यास (जैसे जटा-पाठ, घन-पाठ) वैदिक पाठ-परम्परा की स्थायित्व-शक्ति को सुनिश्चित करते हैं।

अध्ययन यह भी दर्शाता है कि पाराशरी शिक्षा में वर्णित सिद्धान्त वैदिक ज्ञान को त्रुटिरहित बनाए रखने की एक उन्नत प्रणाली का निर्माण करते हैं, जिसे आधुनिक भाषाविज्ञान और ध्वनि-विज्ञान के संदर्भ में भी अत्यंत विकसित माना जा सकता है। इस प्रकार, यह ग्रन्थ केवल एक शिक्षाशास्त्रीय दस्तावेज न होकर, वैदिक संस्कृति की निरन्तरता और संरक्षण का मूल स्तम्भ है।

अतः समग्रतः कहा जा सकता है कि पाराशरी शिक्षा वैदिक ज्ञान-परम्परा के संरक्षण में सैद्धान्तिक आधार, व्यावहारिक अनुशासन तथा परम्परागत निरन्तरता का समन्वित प्रतिरूप प्रस्तुत करती है, जो इसे भारतीय ज्ञान-परम्परा का एक महत्वपूर्ण और स्थायी स्तम्भ सिद्ध करता है।

संदर्भ-सूची –

1.पाणिनीय शिक्षा : श्लो. स. 1-2
2.शिक्षावल्ली : श्लो. स. 1.9
3.विष्णु पुराण : श्लो. स. 1
4.भगवद्गीता : श्लो. स. 8.13
5.याज्ञवल्क्य शिक्षा : श्लो. स. 5
6.मण्डूक शिक्षा : श्लो. स. 4
7.श्रीमद्भागवत महापुराण : श्लो. स. 1.3, 21
8.बृहत्पाराशर होरा शास्त्र : श्लो. स. 2.4
9.तैत्तिरीय उपनिषद् : (शिक्षावल्ली) श्लो. स. 1.2
10. हठयोग प्रदीपिका : श्लो. स. 2.2
11. तैत्तिरीय उपनिषद् : (शिक्षावल्ली) श्लो. स. 1.11